राष्ट्रीय विज्ञान केन्द्र, दिल्ली - गतिविधियों की हिन्दी संक्षेपिका

विज्ञानोदय

अंक-12 / वर्ष 2024 / तिमाही- जुलाई-सितम्बर

चन्द्रमा पर उतरने का दिवस – विद्यार्थियों के लिए सप्ताह पर्यंत कार्यक्रम

राष्ट्रीय विज्ञान केंद्र, दिल्ली ने 20 जुलाई से 26 जुलाई 2024 तक स्कूली विद्यार्थियों के लिए "चंद्रमा-विशेषताएं और तथ्य" शीर्षक से एक इंटरैक्टिव साइंस ऑन स्फीयर कार्यशाला का आयोजन करके चंद्रमा लैंडिंग दिवस मनाया। कार्यशाला के दौरान विद्यार्थियों ने विभिन्न अवधारणाओं के बारे में सीखा, जैसे कि चंद्रमा की विभिन्न कलाएं, चंद्र ग्रहण और चंद्रमा की सतह की विशेषताएं। 'क्रेटर बनाओ' और चंद्रमा के चरण जैसी गतिविधियां भी आयोजित की गईं। क्रेटर के निर्माण को समझने के लिए छात्रों ने चंद्रमा की आभासी सतह पर क्रेटर बनाए। कार्यक्रम में कुल 615 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

नवप्रवर्तन केन्द्र में सत्र का आयोजन

राष्ट्रीय विज्ञान केंद्र, दिल्ली के इनोवेशन स्पेस में स्कूली छात्रों के लिए विभिन्न विषयों पर सत्र आयोजित किए। छात्रों ने व्यावहारिक प्रयोग सीखा और प्रयोगों का आनंद लिया। दिल्ली के विभिन्न स्कूलों के छात्रों ने रोबोटिक्स, बायोटेक्नॉलॉजी पर आधारित प्रयोग किए। "बांसुरी बनाया, डीएनए आधारित प्रयोग किए, टेस्ला कॉइल बनाया "अपना खुद का स्पीकर बनाया", "फैंटास्टिक केमिस्ट्री", "पीप इन टू द सेल" और "द वॉटर शो" आदि विषयों पर विभिन्न व्यावहारिक गतिविधियों के बारे में सीखा।

केन्द्र से बाहर विज्ञान शिक्षा गतिविधियों में भागीदारी-

एनआईएससीपीआर, पूसा, नई दिल्ली

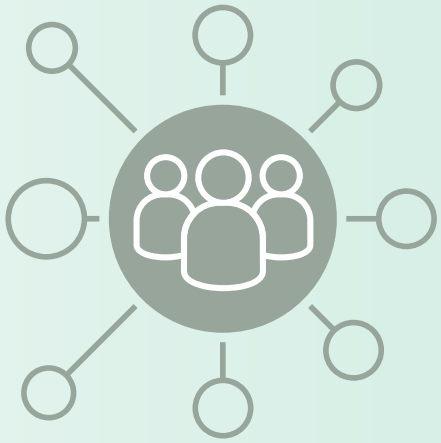

राष्ट्रीय विज्ञान केन्द्र, दिल्ली ने 15 जुलाई 2024 को वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद-राष्ट्रीय विज्ञान संचार और नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-एनआईएससीपीआर), पूसा, नई दिल्ली में विज्ञान शिक्षा गतिविधियों में भाग लिया। सुपर कूल्ड शो पर एक आकर्षक प्रदर्शन व्याख्यान और प्रतिभागी विद्यालयों के लिए विज्ञान शो का आयोजन किया गया। विज्ञान शो में लगभग 200 छात्रों और शिक्षकों ने भाग लिया।

मिरांडा हाउस कॉलेज

राष्ट्रीय विज्ञान केंद्र, दिल्ली ने 11 जुलाई 2024 को मिरांडा हाउस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में आउटरीच विज्ञान शिक्षा गतिविधियों में भाग लिया। कार्यक्रम में उपस्थित लोगों के लिए सुपर कूल्ड शो और फन विद फिजिक्स पर एक आकर्षक प्रदर्शन व्याख्यान आयोजित किया गया। विज्ञान शो में लगभग 500 छात्रों और शिक्षकों ने भाग लिया।

वन महोत्सव- वृक्षारोपण एवं हर्बल गार्डन का भ्रमण

राष्ट्रीय विज्ञान केंद्र, दिल्ली ने वन महोत्सव 12 और 13 जुलाई 2024 के दौरान आयोजित किया, इसके अंतर्गत हर्बल गार्डन का गाइडेड टूर कराया गया, वृक्षारोपड़ एवं ओपन हाउस प्रश्नोत्तरी का आयोजना किया गया। आगंतुकों को औषधीय पौधों की पहचान एवं उनके गुणों से अवगत कराया गया। कार्यक्रम में 100 से अधिक लोगों ने भाग लिया।

लोकप्रिय विज्ञान व्याख्यान

24 जुलाई 2024 को केन्द्र में कैंसर के बारे में तथ्य और मिथक विषय पर एक लोकप्रिय विज्ञान व्याख्यान का आयोजन किया गया। यह व्याख्यान फोर्टिस अस्पताल, शालीमार बाग, नई दिल्ली के अतिरिक्त निदेशक और यूनिट प्रमुख डॉ. सुहैल कुरेशी द्वारा दिया गया । व्याख्यान में विभिन्न स्कूलों के छात्रों और DIET/ कॉलेज के विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस व्याख्यान के दौरान छात्र कैंसर की बीमारी होने के कारण और रोकथाम से परिचित हुए और इस बीमारी के बारे में जागरूक हुए। व्याख्यान में लगभग 340 छात्रों ने भाग लिया।

राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस कार्यक्रम

राष्ट्रीय विज्ञान केंद्र, दिल्ली ने छात्रों और शिक्षकों के लिए 21 से 23 अगस्त 2024 तक विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रम आयोजित करके पहला राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस मनाया। स्कूल के छात्रों के लिए इंटरैक्टिव वर्कशॉप-मून आवर सेलेस्टियल नेबर के साथ-साथ "हमारे चारों ओर सितारे और ग्रह" विषय पर एक विशेष साइंस ऑन स्फीयर शो का आयोजन किया गया। 22 अगस्त 2024 को खगोल विज्ञान - सौर मंडल पर एक शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। 100 से अधिक प्रशिक्षु शिक्षकों ने कार्यक्रम में भाग लिया और सौर मंडल का एक स्केल डाउन मॉडल बनाया। छात्रों और शिक्षकों के लिए एक ओपन हाउस क्विज़ का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम में कुल 155 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

"भारत को जानो कार्यक्रम"

विदेश मंत्रालय द्वारा 'भारत को जानो' कार्यक्रम के अंतर्गत 21 जुलाई 2024 और 30 अगस्त 2024 को पराग्वे, युगांडा, थाईलैंड, मॉरीशस और चेक गणराज्य के 36 प्रतिनिधियों ने विज्ञान केन्द्र का भ्रमण किया। ये युवा प्रतिनिधि राजनीतिक दलों (सत्तारूढ़ और विपक्ष दोनों), उद्यमी और अपने-अपने देशों के उभरते नेता थे। दौरे का उद्देश्य उन्हें भारतीय संस्कृति और परंपरा से परिचित कराना था।

शिक्षक उन्मुखीकरण कार्यक्रम

राष्ट्रीय विज्ञान केंद्र, दिल्ली ने 24 जुलाई, 2024 और 22 अगस्त, 2024 को सेवा-पूर्व शिक्षकों के लिए शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। शिक्षकों ने कार्यशाला के दौरान कक्षा शिक्षण के लिए कम लागत वाली शिक्षण सहायक सामग्री विकसित करना सीखा। उनके लिए पाठ्यक्रम आधारित बायोटेक, भौतिकी और खगोल विज्ञान कार्यशालाएँ आयोजित की गईं। शिक्षकों के लिए "इंजन" और दैनिक जीवन में विज्ञान पर व्याख्यान भी आयोजित किया गया। कार्यक्रम में लगभग 140 सेवा पूर्व शिक्षकों ने भाग लिया।

एर्नो रूबिक्स अविष्कार और आईसीएल प्रतियोगिता के 50 वर्ष

प्रदर्शनी का उद्घाटन

राष्ट्रीय विज्ञान केंद्र, दिल्ली, हंगेरियन सांस्कृतिक केंद्र, भारत और इंटरनेशनल क्यूबर्स लीग (आईसीएल) ने एर्नो रूबिक्स आविष्कार के 50 साल पर प्रदर्शनी का आयोजन किया। आईसीएल लिस्केट इंस्टीट्यूट, द हंगेरियन कल्चरल सेंटर से संबद्ध है, जिस देश से रूबिक क्यूब की उत्पत्ति हुई थी।

हमें यह बताते हुए खुशी हो रही है कि इंटरनेशनल क्यूबर्स लीग ने राष्ट्रीय विज्ञान केंद्र तथा अपने अन्य सम्मानित भागीदारों, के साथ शनिवार, 27 जून 2024 को सुबह 10:45 बजे से अपनी पहली '**दिल्ली राज्य क्यूबिंग प्रतियोगिता**' ऑफ़लाइन आयोजित की।

भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय और राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद के तत्वावधान में आयोजित यह उद्घाटन समारोह आईसीएल के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। भारत के सबसे तेज़ धावक (1995-1998), 1997 के राष्ट्रीय खेलों में सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी और खेल और सोशल मीडिया में एक प्रसिद्ध व्यक्ति के खिताब से सम्मानित श्री अमित खन्ना कार्यक्रम के अतिथि थे।

सीएसआईआर प्रदर्शनी

राष्ट्रीय विज्ञान केंद्र, दिल्ली ने विज्ञान संचार और प्रसार निदेशालय, सीएसआईआर मुख्यालय के सहयोग से 27 और 29 सितंबर 2024 को राष्ट्रीय विज्ञान केंद्र, दिल्ली में सीएसआईआर की विषयगत उपलब्धियों पर एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी में सीएसआईआर की अनुसंधान एवं विकास उपलब्धियों को प्रदर्शित किया गया। आठ विषयगत क्षेत्र जिनमें एयरोस्पेस से लेकर कृषि, ऊर्जा से लेकर बुनियादी ढांचे, रसायन और चमड़ा उद्योग से लेकर स्वास्थ्य देखभाल और पर्यावरण, खाद्य और पानी से लेकर खनिज और सामग्री जैसे विषय शामिल थे। प्रदर्शनी का उद्घाटन सीएसआईआर की महानिदेशक डॉ. एन. कलैसेलवी ने किया, श्री. एस. कुमार, डीडीजी, एनसीएसएम और निदेशक राष्ट्रीय विज्ञान केंद्र, दिल्ली इस अवसर पर उपस्थित रहे। विजेताओं को प्रमाणपत्र और सीएसआईआर द्वारा स्मृति चिन्ह प्रदान किए गए। सीएसआईआर गैलरी में आने वाले छात्रों, शोधकर्ताओं और उत्साही लोगों के लिए सामान्य प्रश्नोत्तरी पर सत्र का आयोजन किया गया।

27 सितंबर 2024 को सीएसआईआर-सेलुलर और आणविक जीवविज्ञान केंद्र (सीएसआईआर-सीसीएमबी), हैदराबाद के निदेशक डॉ. विनय के. नंदिकूरी द्वारा लोकप्रिय विज्ञान व्याख्यान का दिया गया। कार्यक्रम में 4500 से अधिक दर्शकों ने भाग लिया।

कबाड़ से कला
कार्यशाला एवं प्रतियोगिता

राष्ट्रीय विज्ञान केन्द्र ने 24 से 26 सितंबर तक "कबाड़ से कला" विषय पर 3 दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया जिसमें विभिन्न प्रतिभागियों को रचनात्मक रूप से अनुपयोगी पदार्थों का भिन्न रूप में पुन: उपयोग करने के लिए प्रेरित किया गया। कार्यक्रम में स्कूल समूह, गैर सरकारी संगठन, कला महाविद्यालय के छात्र-छात्राएं और संस्कृति मंत्रालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। प्रतिभागियों को वैज्ञानिक ढंग से नवीन और कलात्मक वस्तुओं के निर्माण के लिए कार्यालय में उपलब्ध अनुपयोगी पदार्थों का उपयोग करने, रचनात्मकता और टिकाऊ प्रथाओं के बारे में प्रोत्साहित किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य पुनर्चक्रण की संस्कृति को प्रेरित करना, बेकार पड़ी सामग्रियों को आकर्षक कलात्मक कृतियों में बदलने के साथ ही पर्यावरण संरक्षण और वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देना था। प्रतियोगिता के दौरान नवीन कलाकृतियाँ विकसित की गईं और निर्णायकों के एक दल ने इसका मूल्यांकन किया। प्रत्येक श्रेणी में विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किये गये।

ओजोन दिवस

ओजोन दिवस के अवसर पर, राष्ट्रीय विज्ञान केंद्र, दिल्ली में विद्यार्थियों को ओजोन परत के महत्व और पृथ्वी पर जीवन को हानिकारक यू वी विकिरण से बचाने में इसकी भूमिका के बारे में जानने का एक समृद्ध अनुभव प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में "जलवायु परिवर्तन" पर इंटरैक्टिव एसओएस सत्र आयोजित किया गया जहां छात्रों ने पर्यावरण संरक्षण और ओजोन परत के क्षरण के खतरों के बारे में जानकारी प्राप्त की। एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता भी आयोजित की गई, जिसमें लगभग 100 विद्यार्थी शामिल हुए । जिसमें ओजोन परत, जलवायु परिवर्तन और टिकाऊ प्रथाओं के बारे में उनके ज्ञान का परीक्षण किया गया। इस आयोजन ने स्वस्थ ग्रह के लिए कुछ अच्छा करने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में लगभग 200 छात्रों और सामान्य दर्शकों ने भाग लिया।

चर्चित वैज्ञानिक

सर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया

सर मोक्षगुणम विश्वेश्वरैया भारतीय सिविल इंजीनियर , प्रशासक और राजनेता थे, जिन्होंने 1912 से 1918 तक मैसूर के 19वें दीवान के रूप में भी कार्य किया।एम. विश्वेश्वरैया को भारत में सबसे अग्रणी सिविल इंजीनियरों में से एक माना जाता है, इनके जन्मदिन, 15 सितंबर को प्रत्येक वर्ष भारत में 'इंजीनियर्स डे' के रूप में मनाया जाता है। इन्हें "आधुनिक मैसूर का निर्माता " भी माना जाता है। कन्नड़ भाषा के अख़बार प्रजावाणी के अनुसार , वे दक्षिण भारतीय राज्य कर्नाटक के सबसे लोकप्रिय वैज्ञानिक हैं। विश्वेश्वरैया 1885 में बॉम्बे प्रेसीडेंसी के लोक निर्माण विभाग, बॉम्बे में सहायक इंजीनियर बन गए। 1899 में, विश्वेश्वरैया को भारतीय सिंचाई आयोग में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया गया, जहाँ उन्होंने दक्कन के पठार में सिंचाई की एक जटिल प्रणाली लागू की और स्वचालित वियर जल बाढ़ द्वार की एक प्रणाली को डिज़ाइन और पेटेंट कराया, जिसे पहली बार 1903 में पुणे के पास खड़कवासला बांध में स्थापित किया गया । इन द्वारों ने बांध को कोई नुकसान पहुँचाए बिना जलाशय में भंडारण स्तर को उच्चतम स्तर तक बढ़ा दिया। इन द्वारों की सफलता के आधार पर, ग्वालियर में तिगरा बांध और बाद में कर्नाटक के मैसूर में केआरएस बांध में भी यही प्रणाली स्थापित की गई। बाद में वे कोल्हापुर के पास लक्ष्मी तलाव बांध के मुख्य अभियंता बन गए ।

विश्वेश्वरैया ने ब्रिटिश भारत सरकार के लिए एक सिविल इंजीनियर के रूप में काम किया और बाद में मैसूर साम्राज्य के प्रधान मंत्री के रूप में काम किया । ब्रिटिश भारत में उनकी अद्वितीय सेवाओं के लिए नाइट की उपाधि प्रदान की गई। मैसूर साम्राज्य और भारत गणराज्य के लिए उनकी सेवाओं के लिए, उन्हें 1955 में भारत सरकार द्वारा भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद ने अपने बगलोर स्थित विज्ञान केन्द्र का नाम इस महान वैज्ञानिक के नाम पर रखा है।

राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस कार्यक्रम

राष्ट्रीय विज्ञान केंद्र, दिल्ली ने विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए 21 से 23 अगस्त 2024 तक विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रम आयोजित करके पहला राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस मनाया। स्कूल के छात्रों के लिए इंटरैक्टिव वर्कशॉप-मून आवर सेलेस्टियल नेबर के साथ-साथ "हमारे चारों ओर सितारे और ग्रह" विषय पर एक विशेष साइंस ऑन स्फीयर शो का आयोजन किया। 22 अगस्त 2024 को खगोल विज्ञान - सौर मंडल पर एक शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। 100 से अधिक प्रशिक्षु शिक्षकों ने कार्यक्रम में भाग लिया और सौर मंडल का एक स्केल डाउन मॉडल बनाया। छात्रों और शिक्षकों के लिए एक ओपन हाउस क्विज़ का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम में कुल 155 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

हर घर तिरंगा अभियान

राष्ट्रीय विज्ञान केंद्र, दिल्ली ने स्वतंत्रता दिवस मनाया और ध्वजारोहण समारोह का आयोजन किया। निदेशक राष्ट्रीय विज्ञान केंद्र, दिल्ली ने 15 अगस्त 2024 को राष्ट्रीय ध्वज फहराया। हर घर तिरंगा कार्यक्रम के तहत, सभी स्टाफ सदस्यों को राष्ट्रीय ध्वज वितरित किया गया और सभी ने अपने घर पर झंडा फहराया और सोशल मीडिया पर फोटो पोस्ट की । इस अवसर पर आगंतुकों के लिए सेल्फी पॉइंट भी बनाए गए।

रा. वी. के., दिल्ली में स्केच आर्टिस्ट

राष्ट्रीय विज्ञान केंद्र, दिल्ली ने अर्बन स्केचर्स के साथ 4 अगस्त 2024 को एनएससी दिल्ली में "विज्ञान केंद्र का एक स्केच बनाएं" कार्यक्रम का आयोजन किया। केंद्र में पेशेवर और शौकिया स्केच कलाकारों के समूह को आमंत्रित किया गया । उन्होंने विज्ञान केंद्र भवन के एक रेखाचित्र बनाए। आगंतुकों द्वारा सुंदर रेखाचित्रों की सराहना की गई। कार्यक्रम में लगभग 50 रेखाचित्रकारों ने भाग लिया।

वॉटर रॉकेट प्रदर्शन

राष्ट्रीय विज्ञान केंद्र, दिल्ली ने 24 अगस्त 2024 को आगंतुकों के लिए **"हाइड्रो रॉकेट लॉन्च"** का आयोजन किया। रॉकेट का एक प्लास्टिक बोतल से प्रोटोटाइप मॉडल विकसित किया गया और वायु पंप का उपयोग करके लॉन्च किया गया। कार्यक्रम में 200 से अधिक आगंतुकों ने भाग लिया और रॉकेट्री में शामिल बुनियादी विज्ञान को सीखा।

हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम

कर्मचारियों को सरकारी कामकाज हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए राष्ट्रीय विज्ञान केंद्र, दिल्ली द्वारा १४ से २८ सितंबर २०२४ तक हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान स्वरचित पाठ प्रतियोगिता, श्रुतलेख प्रतियोगिता, अनुवाद प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, आशु -भाषण प्रतियोगिता, स्लोगन लेखन प्रतियोगिता जैसी प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय विज्ञान केंद्र, दिल्ली के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

अंतर्राष्ट्रीय एस्ट्रोनोमी ओलंपियाड

प्रस्थान पूर्व शिविर (आईओएए) का आयोजन

राष्ट्रीय विज्ञान केंद्र, दिल्ली ने 25 से 2 सितम्बर 2024 तक तीसरे IOAA प्रतिभागियों के लिए प्रस्थान पूर्व शिविर का आयोजन किया। प्रतिभागियों के लिए अभ्यास सत्र और आकाश अवलोकन, तारमण्डल शो, जन्तर मन्तर भ्रमण आदि गतिविधियों का आयोजित किया गया।

समाज के अल्प सुविधा सम्पन्न बच्चों का भ्रमण

वैज्ञानिक स्वभाव को विकसित करने और उनमें विज्ञान को लोकप्रिय बनाने के लिए समाज के वंचित वर्ग के लिए दीर्घाओं और विशेष शो का निर्देशित दौरा आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों और आगंतुकों को विज्ञान सीखने के लिए एक समृद्ध अनुभव प्रदान करना और दिलचस्प तरीके से वैज्ञानिक दृष्टिकोण बनाना और विकसित करना था। विभिन्न गैर सरकारी संगठनों के कुल 671 बच्चों ने केंद्र का दौरा किया और लाभान्वित हुए।

स्वच्छता पखवाड़ा

राष्ट्रीय विज्ञान केंद्र में 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक आयोजित स्वच्छता पखवाड़े के दौरान, छात्रों, दर्शकों, और कर्मचारियों ने स्वच्छता और पर्यावरण जागरूकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कई गतिविधियों में भाग लिया। इस आयोजन में दैनिक जीवन में स्वच्छता और साफ-सफाई के महत्व पर केंद्रित कार्यशालाओं और इंटरैक्टिव सत्र में शामिल हुए। छात्र आसपास के क्षेत्रों की सफाई करने और स्वच्छता का संदेश फैलाने के लिए भी प्रेरित हुए । प्रश्नोत्तरी और समूह चर्चाओं के माध्यम से, उन्होंने अपशिष्ट प्रबंधन, पुनर्चक्रण और परिवेश को साफ रखने के महत्व के बारे में सीखा। इस पहल ने प्रतिभागियों के बीच जिम्मेदारी और टीम भावना को बढ़ावा दिया।

संजीवनी

भारत में प्राचीन काल से कई अलग-अलग जड़ी-बूटियों और पेड़-पौधों का स्वास्थ्य के लिए किसी न किसी रूप में इस्तेमाल होता आ रहा है। आयुर्वेद के अनुसार अधिकतर पौधों में कुछ न कुछ औषधीय गुण होते हैं, जिनकी वजह से उनका इस्तेमाल पारंपरिक चिकित्सा पद्धति और दवाएं बनाने के लिए किया जाता है। आपके आसपास पेड़-पौधों में ऐसी शक्ति होती है, जो बड़ी से बड़ी बीमारी को मात दे सकती है। एक ऐसा ही औषधीय गुणों वाला पौधा बारलेरिया प्रायोनाइटिस (Barleria prionitis) है जिसे भारत में वज्रदंती (vajradanti) के नाम से जाना जाता है।

ऐसा माना जाता है कि इस पौधे में ऐसी गुण होते हैं, जो दांत दर्द, खून की कमी एनीमिया, सांप के काटने, डायबिटीज, फेफड़ों की बीमारी और खून से जुड़े रोगों का इलाज कर सकती हैं। यह भारत सहित एशिया के कई देशों में पाया जाने वाला पौधा है। इसमें पीले और नीले रंग के फूल आते हैं। वज्रदंती पौधे के फूल, पत्ते, तने और जड़ों का उपयोग आयुर्वेद में विभिन्न औषधियों को बनाने के लिए किया जाता है। इस पौधे में फ्लेवोनोइड्स, फेनोलिक, इरिडोइडल और फेनिलथेनॉइड ग्लाइकोसाइड्स यौगिक पाए जाते हैं। साथ ही यह एंटी-इंफ्लेमेटरी, एंटीबैक्टीरियल, एंटीडायबिटिक, एंटीऑक्सिडेंट, एंटिफंगल और हेपेटोप्रोटेक्टिव गुणों से भरपूर है।

भारत में पारंपरिक दवाओं में वज्रदंती औषधि का उपयोग किया जाता रहा है। वज्रदंती का प्रयोग घाव, जलन, मसूड़े की सूजन, दांत दर्द, एनीमिया, डायबिटीज, फेफड़ों की बीमारियां, कब्ज, जोड़ों का दर्द, किडनी की पथरी, तनाव, और बाल झड़ने जैसी समस्याओं का समाधान करने में कारगर माना जाता है।

अस्वीकृति यह लेख केवल सामान्य जानकारी के लिए है। दवा या इलाज हेतु डॉक्टर से परामर्श लें।